कंचन देवी, भा.व.से,
महानिदेशक,
भारतीय वानिकी अनुसंधान
एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून एवं
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

सन्देश

प्रिय भा.वा.अ.शि.प. परिवार के सदस्यों, हार्दिक अभिनंदन और हिंदी दिवस/सप्ताह/पखवाड़ा की हार्दिक शुभकामनाएं!

भारत अपनी बहुसांस्कृतिक परंपरा और भाषाई विविधता के लिए विख्यात है, और हिंदी देश में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में अग्रणी स्थान रखती है। आज वैश्विक स्तर पर भी हिंदी की अभिव्यक्ति-शक्ति, सरलता और समावेशी सांस्कृतिक भाव को व्यापक स्वीकार्यता मिल रही है।

हिंदी हमारे सम्मान, स्वाभिमान और गर्व की भाषा है। हिंदी का इतिहास प्राचीन संस्कृत भाषा से जुड़ा है और समय के साथ इसने अनेक भाषाओं से शब्दावली को आत्मसात कर समृद्धि पाई है। हिंदी एक प्रकार से सभी भारतीय भाषाओं की सखी है और सभी सखियाँ भारत का गौरव हैं। हिंदी ऐसी भाषा है, जो हमारे देश की विविधता को एकजुट करती है। विविधता में एकता के सेतु का कार्य करती है।

औपनिवेशिक युग के उत्तरार्द्ध में भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हिंदी नवजागरण को धार दी, और भाषा के माध्यम से जनजागरण व राष्ट्रीय चेतना का संवर्धन हुआ। उन्होंने हिंदी भाषा के माध्यम से लोगों की एकता को मजबूत करने तथा उन्हें संघर्ष के लिए प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। श्री रामधारी सिंह दिनकर, श्री बंकिम चन्द्र चटर्जी, श्री सचिन्द्र नाथ सान्याल जी, श्री सुभाषचंद्र बोस, रविन्द्र नाथ टैगोर जैसे मनीषियों ने लोगों के दिलों में राष्ट्रीय एकता और गर्व की भावना को प्रबल किया। स्वतंत्रता आंदोलन के समय महात्मा गाँधी सहित अनेक नेताओं ने भारतीय एकता के लिये हिंदी के विकास का समर्थन किया। भारतेंदु ने राष्ट्रीय चेतना के साथ राष्ट्र के प्रति समर्पण का भाव व्यक्त करते हुए लिखा है –

“ निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटै न हिय को सूल।। ”

स्वतंत्रता के बाद 14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा ने देवनागरी लिपि में हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया; इसी स्मृति में प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। संविधान के भाग 17 में अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा के प्रावधानों का विधान है।

राजभाषा हिंदी के संवर्धन हेतु 1949 के बाद से निरंतर मानकीकरण और आधुनिकीकरण के प्रयास हुए- व्याकरण और वर्तनी के विनियमन, देवनागरी लिपि के मानकीकरण, और तकनीकी संगतता जैसे क्षेत्रों में संस्थागत पहलें हुई। सूचना-प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में यूनिकोड के आगमन से हिंदी की डिजिटल उपस्थिति में गुणात्मक विस्तार हुआ और वेब/मोबाइल प्लेटफ़ॉर्म पर हिंदी का प्रयोग सुगम बना।

राजभाषा हिंदी के संवर्धन में भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् एवं इसके अधीनस्थ संस्थान भी अपना योगदान देते आ रहे हैं। परिषद् के पांच संस्थान 'क' क्षेत्र में एवं चार संस्थान 'ग' क्षेत्र में स्थित हैं, जो अपने कार्यालयीन कार्यों जैसे पत्राचार, टिप्पण, प्रारूपण आदि में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग कर रहे हैं। अत्यंत हर्ष के साथ मैं यहाँ उल्लेख करना चाहती हूँ कि राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य के लिए जबलपुर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा भा.वा.अ.शि.प.-उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर को तथा जोरहाट नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा भा.वा.अ.शि.प.-वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। इसके अतिरिक्त, जोधपुर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति से भा.वा.अ.शि.प.-शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर को द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने के लिए परिषद् एवं अधीनस्थ संस्थानों द्वारा हिंदी भाषा/द्विभाषिक रूप में कई प्रकाशन किये जाते हैं; जैसे वार्षिक पत्रिका 'तरुचिन्तन', मासिक पत्रिका वानिकी समाचार, आफरी दर्पण, वन अनुसंधान ई-पत्रिका, वर्षारण्यम्, वन संज्ञान आदि।

भा.वा.अ.शि.प. मुख्यालय सहित समस्त संस्थानों एवं केन्द्रों में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु हिंदी दिवस बड़े उत्साह से मनाया जाता है। प्रतिवर्ष सितम्बर माह में हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में हिंदी दिवस/ सप्ताह/ पखवाड़ा मनाया जाता है। इस दौरान राजभाषा हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करने के लिए अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने के लिए कई प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त,संस्थान स्तर पर तथा व्यक्तिगत स्तर पर "राजभाषा प्रोत्साहन पुरस्कार" दिया जाता है।

लोकतांत्रिक संवाद को सुदृढ़ बनाने के लिए सरल, सहज, और सर्वसुलभ भाषा का उपयोग आवश्यक है, ताकि राजभाषा और जनभाषा के मध्य की दूरी न्यूनतम हो। हिंदी दिवस/सप्ताह/पखवाड़े के निमित्त आयोजित कार्यक्रम हमारी सामूहिक प्रतिबद्धता को नई ऊँचाई देते हैं और सहभागिता से भाषा-उपयोग की संस्कृति का विस्तार करते हैं। मैं परिषद के कार्यों की सराहना करते हुए हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ। आशा है कि प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी आप सभी आयोजित की जाने वाली प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़कर भाग लेंगे और इस आयोजन को सफल बनाएँगे।

जय हिन्द, जय हिन्दी!

देहरादून
14 सितम्बर, 2025

कंचन
(कंचन देवी)